हौसलों की उड़ान

माला सिंह (स.अ.)
प्रा. वि. अजीजपुर
जिगनेरा ददरौल, शाहजहाँपुर

पूर्व की स्थिति – प्रायः यह देखने में आता था कि दिव्यांग विद्यार्थी, विद्यालय में नामांकित हो जाते थे, परंतु उनकी उपस्थिति व ठहराव सामान्य विद्यार्थी के अनुपात में कम रहती थी। ऐसे विद्यार्थियों की उपस्थिति व ठहराव बढ़ाने, सामान्य विद्यार्थियों के मन में ऐसे विद्यार्थियों के प्रति समानुभूति का भाव जगाने, दिव्यांग विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को बढ़ाने तथा उन्हें शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के उद्देश्य से यह नवाचार किया गया। यह नवाचार कक्षा 1 से 5 तक के दिव्यांग विद्यार्थियों के लिये किया गया।

क्रियान्वयन– प्रथम विधि–गेंद द्वारा खेल–खेल में सीखना–

नवाचार के क्रियान्वयन हेतु दो पुरानी गेदों का प्रयोग किया गया, जिनके ऊपर वर्णों व संख्याओं को बड़ा व उभरा हुआ बनाया गया, जिससे कि सामान्य विद्यार्थियों के साथ दृष्टि बाधित विद्यार्थी भी इसका सुगमता से प्रयोग कर सके। वहीं दूसरी विद्यार्थी सुरुचि (अस्थि बाधित) आराम से अपनी व्हीलचेयर पर बैठकर सामान्य विद्यार्थियों के साथ खेल–खेल में पढ़ना सीख सके।

इस टी0एल0एम0 को दो या दो से अधिक विद्यार्थियों के साथ उपयोग में लाया गया। विद्यार्थियों को दो समूहों में विभाजित करके उन्हें आमने–सामने पंक्तिबद्ध करके खड़ा किया गया तथा उन्हें एक–दूसरे की तरफ गेंद फेंकने को कहा गया, फिर अध्यापिका या अन्य किसी विद्यार्थी द्वारा गेंद पकड़ने वाले विद्यार्थी से अक्षर या संख्या को पूछा गया। उत्तर के पश्चात दूसरे विद्यार्थियों के

साथ यही क्रम दोहराया गया। यदि कोई विद्यार्थी उत्तर नहीं दे पाया तो अन्य विद्यार्थियों के द्वारा उसकी मदद की गयी। इस टी0एल0एम0 की सहायता से पीयर लर्निंग (अपने साथी द्वारा सीखना) आसानी से करवायी जा सकी, क्योंकि गेंद से खेलना प्रत्येक विद्यार्थी को पसंद होता है। इस टी0एल0एम0 का प्रयोग हर स्तर के विद्यार्थी द्वारा किया गया। जो गिनती के स्तर पर है, उनसे गिनती पूछी गई, जो जोड़ व घटाव के स्तर पर है, उनसे एक अंक के जोड़ व घटाव के प्रश्न पूछे गए। भाषा के लिए वर्ण पहचान के साथ अगले स्तर वाले विद्यार्थियों को वर्ण की डिकोडिंग करने को कहा गया। इस टी0एल0एम0 के उपयोग हेतु विद्यार्थियों को न तो उनके स्तर के अनुरूप बाँटकर गतिविधि कराने की आवश्यकता होती है, न ही दिव्यांगता के अनुसार। पूरी कक्षा के बच्चे एक साथ एक ही समय पर खेल–खेल में सीख सकते हैं। इस टी0एल0एम0 के द्वारा भाषा व गणित की बहुत–सी गतिविधियाँ एक साथ करवायी जा सकती हैं जैसे–

भाषा– वर्ण पहचान, शब्द बनाओ, अन्त्याक्षरी, डिकोडिंग।

गणित– संख्या पहचान, गिनती, पहाड़े, जोड़ व घटाना आदि।

दिव्यांग और सामान्य छात्र एक साथ गेंद द्वारा खेल–खेल में सीखते हुए

प्रथम गतिविधि का प्रभाव– इस नवाचार के क्रियान्वयन के पश्चात् कक्षा में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए। दिव्यांग विद्यार्थियों की उपस्थिति व ठहराव एवं अधिगम स्तर में अपेक्षित सुधार हुए जैसे– दृष्टिबाधित विद्यार्थी नेहा की उपस्थिति बढ़कर 72: हो गयी। विद्यार्थियों में समानुभूति एवं सहयोग की भावना जागृत हुई। अस्थि बाधित विद्यार्थी के शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुयी। पहले वह कभी–कभी विद्यालय आते थे। बाद में सभी छात्रों द्वारा प्रतिदिन सुरुचि को

व्हील चेयर से विद्यालय लाने, उसकी बोतल भरने, खाना, लाकर देने आदि के रूप में सहायता प्रदान की जाने लगी। शिक्षण में जी0आर0आर0 (Gradual Release of Responsibility इसमें तीन चरणों (पहला 'मैं करूं जिसमें अध्यापिका पहले विद्यार्थियों को प्रकरण समझाती है फिर 'हम करे' में विद्यार्थियों के साथ मिलकर उस प्रकरण पर काम करती है फिर अंत में 'तुम करो' में गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों की संप्राप्ति स्तर का आंकलन करती है) का उपयोग आसानी से हो पाया। पीयर लर्निंग द्वारा कक्षा का माहौल सहज व आनंददायक बना।

द्वितीय गतिविधि–घंटी बजाओ सिक्का उठाओ –

शिक्षण के दौरान शिक्षिका द्वारा अनुभव किया गया कि दिव्यांग विद्यार्थी कई प्रकार की गतिविधियाँ करने में असहज महसूस करते हैं क्योंकि उनके दोनों हाथों का तालमेल एक साथ ठीक नहीं है। इसलिए उन्हें ऐसी गतिविधि करवाने का विचार किया, जो उनके हाथों के तालमेल को तो ठीक करे साथ ही उनके मस्तिष्क को भी सक्रिय करने में सहायक हो। इसके लिए चावल से भरा हुआ एक कटोरा लिया और उसमें एक, दो, पाँच एवं दस के सिक्के मिला दिए साथ ही एक घंटी भी रख दी। पहले कक्षा के एक सामान्य विद्यार्थी को एवं एक दिव्यांग विद्यार्थी को बुलाया। फिर सामान्य विद्यार्थी को एक हाथ से घंटी बजाने को कहा तथा दूसरे हाथ से चावल में से सिक्के निकालने को कहा। सिक्के निकालते वक्त घंटी लगातार बजाते रहने को कहा गया। इस दौरान शिक्षिका द्वारा एक से दस तक की गिनती गिनी गयी। दस तक गिनती हो जाने पर विद्यार्थी को रोका गया तथा बाहर निकाले गए सिक्कों को गिनने को कहा गया। यह प्रक्रिया पूर्ण कर लेने के पश्चात् दिव्यांग विद्यार्थी को भी वही गतिविधि दोहराने के लिए कहा गया। 10 तक की गिनती हो जाने पर उसे रोका गया तथा कक्षा 1 के विद्यार्थी की मदद से सिक्के गिनने को कहा गया। इस गतिविधि में न केवल विद्यार्थियों को आनन्द आया अपितु उनके दोनों हाथों का तालमेल भी बेहतर हुआ। इस प्रकार के अभ्यास लगातार करने से दिव्यांग विद्यार्थियों की वस्तुओं पर पकड़ तो मजबूत होती ही है। साथ में वे अपनी एकाग्रता को भी बढ़ा पाते हैं। यह गतिविधि करने के बाद पाया गया कि दिव्यांग विद्यार्थियों की पेंसिल

व कलर पर पकड़ मजबूत हुई। अब वह ड्राइंग आदि अधिक अच्छे तरीके से कर पा रहे थे एवं उनके कलर चित्र से बाहर भी नहीं निकल रहे थे। अब वे अपने हाथों पर बेहतर नियंत्रण कर पा रहे थे। इस गतिविधि के द्वारा मुद्रा पहचान, गिनती, जोड़ व घटाव आदि गतिविधियां करवायी गयीं।

दिव्यांग छात्र गतिविधियाँ करते हुए

द्वितीय गतिविधि का प्रभाव– इस गतिविधि को कराने से दिव्यांग विद्यार्थियों के दोनों हाथों का तालमेल बेहतर हुआ। दोनों हाथों का एक साथ इस्तेमाल करने से विद्यार्थियों के फाइन मोटर स्किल्स के विकास और हाथों के कोऑर्डिनेशन में मदद मिली। दिव्यांग विद्यार्थियों की एकाग्रता में काफी वृद्धि हुई। लोकोमोटिव दिव्यांगता में भी यह गतिविधि काफी उपयोगी है।

तृतीय गतिविधि– होम बेस्ड एजुकेशन

शिक्षका द्वारा प्रशिक्षण वीडियो में 'होम बेस्ड एजुकेशन' के बारे में देखा गया। इसलिए सत्र में शिक्षण के दौरान शिक्षिका ने जब यह महसूस किया कि जब अवकाश पड़ते हैं तो दिव्यांग विद्यार्थियों में लर्निंग गैप आ जाता है क्योंकि उन्हें घर में अभिभावक समय नहीं दे पाते हैं। विद्यार्थी भी अपनी दिव्यांगता के कारण फोन पर भेजा गया कार्य स्वयं से नहीं कर पाते इसलिए यह विचार किया कि क्यों न उनके घर पर ही ऐसा नवाचार किया जाए जिससे कि वह अवकाश के दिनों में भी अध्ययन कर सकें। इसके लिए पेन्ट व ब्रश की सहायता से उनके घर में चिह्नित स्थानों जैसे नल का पाइप, चारा काटने वाली मशीन, घर के पेड़, अनाज रखने वाली डेहरिया, दिव्यांग विद्यार्थियों की ट्राई साइकिल, बरामदे के स्तंभ व दीवारों पर उनके अभिभावकों की सहमति व सहायता से हिंदी, अंग्रेजी

एवं गणित की पठन सामग्री लिख दी साथ ही उनके अभिभावकों से यह आग्रह किया कि वे अपने दैनिक क्रियाकलापों को करते हुए अपने बच्चों को भी पढ़ाते रहे जिससे कि उनके लर्निंग गैप को कम किया जा सके।

दिव्यांग छात्र–छात्राओं के घरों को शिक्षिका द्वारा प्रिन्ट रिच बनाया गया

नवाचार का प्रभाव एवं परिणाम –

समावेशी शिक्षा के तहत शिक्षिका द्वारा किए गए नवाचार से बच्चों में कई सकारात्मक परिवर्तन हुए। दिव्यांग छात्रों की उपस्थिति एवं ठहराव पहले की अपेक्षा काफी बढ़ गया। पूर्व के सत्रों में दिव्यांग छात्रों का उपस्थिति प्रतिशत कम रहता था परंतु इस नवाचार के क्रियान्वयन के बाद वर्तमान सत्र में इसमें संतोषजनक वृद्धि हुई। दृष्टिबाधित छात्रा नेहा की उपस्थिति तो 72% रही। कक्षा 1 के विद्यार्थियों द्वारा समानुभुति पूर्वक व्यवहार करने एवं अस्थिबाधित छात्रा सुरुचि को ट्राइसाइकिल पर घर से अपने साथ लाने के कारण उसका उपस्थिति प्रतिशत भी बढ़ा। खेल–खेल में शिक्षण होने से विद्यार्थियों के फाइन

मोटर स्किल्स और हाथों के कोऑर्डिनेशन में मदद मिली। लोकोमोटर दिव्यांगता में भी यह गतिविधियां उपयोगी साबित हुई। शिक्षण में G.R.R विधि का उपयोग आसानी से हो पाया एवं बच्चो के अधिगम स्तर में भी सुधार हुआ। इस नवाचार के पहले अभिभावक बच्चों को स्कूल में नामांकित कराकर सोचते थे कि उनका कार्य पूरा हो गया पर होम बेस्ड एजुकेशन के कारण इस प्रयास को अभिभावकों एवं समुदाय का साथ मिला जो कि उनके बच्चो की शिक्षा में निश्चित ही मील का पत्थर साबित होगा।

दिव्यांग छात्र–छात्राओं का बढ़ता हुआ उपस्थिति प्रतिशत